Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 10, Issue 2 | November 2022 - April 2023 | pp. 39-44

कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य में राष्ट्रीयता की भावना

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण पारीक

सहायक आचार्य, हिन्दी-विभाग, महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

राष्ट्रीय जागरण के युग में 'नवीन' जी के कवि रूप ने अपनी खास पहचान बनायी। विपरीत परिस्थितियों से टकराकर-जूझकर वे नवीन ताकत से फिर-फिर खड़े होते रहे। जीवन के चुनौती-भरे माहौल ने उनमें 'नया' मनुष्य बनने की महत्वाकांक्षा पैदा की। 'नवीन' उपनाम अपनाकर, कलम का हथियार लेकर वे जीवन-संग्राम में कूद पड़े। उनकी रचनाएँ वस्तुतः उनके अन्तर्मन के हाहाकार का बाह्य प्रतिफलन हैं। उनकी कृतियों में युग और मन दोनों ईमानदार रूप में मौजूद हैं। व्यक्तिगत भाव संवेदित युगबोध के साथ एकाकार हो गये हैं। इनके साहित्य में 'सत्य का प्रकाश स्वाभाविक रूप से खुलकर' बाहर आया है। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आने पर इनके जीवन का अर्थ ही बदलता गया। विद्यार्थी जी के पत्र 'प्रताप' से जुड़ने पर इनके लेखन को व्यवस्थित रूप मिला। विद्यार्थी जी की मृत्यु के बाद 'प्रताप', 'नवीन' जी के सम्पादन में निकला। राष्ट्रीय-जागरण के इतिहास में 'प्रताप' विद्यार्थी जी का कीर्ति-स्तम्भ कहलाया और 'नवीन' जी का आधार स्तम्भ। प्रस्तुत शोध-पत्र में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य में राष्ट्रीयता की भावना को अभिव्यक्त करने वाले साहित्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

संकेताक्षर—*राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्र की वेदना, राष्ट्रवादी कवि, अतीत का गौरवगान, स्वर्णिम भविष्य*

प्रस्तावना

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए' के उद्घोष द्वारा राष्ट्रीय संस्कारों का मंत्र फूँकने वाले और हिन्दी-सेवा के लिए 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आधुनिक हिन्दी-साहित्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक-काव्यधारा के अग्रणी कवि रहे हैं।[1] उन्होंने अपने जीवन के तमाम सपनों को, अपनी कलम को और स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। इन्होंने पूर्व भक्तिधारा को देशभक्ति की ओर मोड़ा।[2] जुझारू पत्रकारिता के साथ नये क्रांतिकारी तेवर के साथ राष्ट्रीय काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करने वाली पत्रिका 'प्रभा' का सम्पादन भी 'नवीन' जी ने किया।[3] देशबोध के स्तर पर उनमें राष्ट्रीय संग्राम की जीवनानुभूतियों और जागरण का स्वर है।[4] स्वतंत्रता-संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले देश के लिए अनेक बार जेल जाने वाले 'नवीन' जी ने जैसा जिया वैसा लिखा। उनकी रचनाओं में आजादी की लड़ाई में हिस्सेदारी की भूमिका भी है। हताश और उद्विग्न मन का ताप भी है ओर प्रेमी मन का सरल-सहज अनुराग भी।[5] बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हिन्दी के एक ऐसे राष्ट्रीय कवि हैं, जिनका नाम मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी ओर रामधारी सिंह 'दिनकर' के साथ याद रखा जायेगा। वे भारत की आजादी की लड़ाई में हिस्सेदारी करते रहे।[6] बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आजादी की लड़ाई में शामिल हुए तब वे चौबीस वर्ष के नौजवान थे। उनके नौ बार जेल-यात्रा के वर्णन उनकी कविताओं पर दी तिथियों और कारागृहों के नामों से मिलते हैं।[7] उनमें यह देशभक्ति की भावना जागृत की कानपुर में 'प्रताप' के संपादक और हिन्दू-मुस्लिम दंगे में मुस्लिमों को संरक्षण देने पर शहीद हुए गणेश शंकर विद्यार्थी ने, सन् 1966 में।[8] नवीन जी ने 'प्राणार्पण' और 'आत्मोत्सर्ग' दो काव्य उन पर लिखे।[9]

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की देशभक्ति जीवन से और अध्ययन से बढ़ती गई।[10] बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जो 'प्रलयंकर' में क्रांति का स्वागत करते थे, जिन्होंने लिखा था—

''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाए''

(विप्लव-गान)[11]

''रश्मिरेखा'' में 'आज है होली का त्योहार' कविता में वे लिखते हैं—

उनकी क्या होली दीवाली
उनके क्या त्योहार?
जिसने निज मस्तक पर ओढ़ा
जन-विप्लव का भार![12]

ये 'प्रलयंकर' में लिखते हैं—

भरत खंड के तुम, हे जन गण
चमक रहे हैं तब शोणित में इस भारत-माता के रज-कण
अहंकार,मस्तिष्क, बुद्धि, मन, यह भव रूप और अभ्यंतर
कला, काव्य, इतिहास, पुराण, ललित-ललित कोमल गायन स्वर
तत्व-लक्ष्य एकांत साधना, दर्शन, चिंतन मनन निरंतर।[13]

इनका राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रीय एकात्म मानववाद या विश्व-बंधुत्व के विरोध में नहीं है।[14] इनके काव्य में राष्ट्र की वेदना होती है जिसे अपने अधिकारों से वंचित रखा गया है—

हम संक्रांतिकाल के प्राणी
बदा नहीं सुखभोग
घर उजाड़ कर जेल बसाने का
हमको है रोग[15]

राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्र-भाषा-प्रेम और राष्ट्रीय संस्कृति-प्रेम उनके जीवन में सबसे बड़ा मूल्य था।[16] डॉ. नगेन्द्र कहते हैं—''वे न छायावादी थे न स्वच्छन्दतावादी, उनके काव्य का प्रमुख स्वर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक ही है।''[17] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं—''छायावाद की मूलधारा से पृथक् परन्तु विश्वासों में सम्पूर्ण स्वच्छन्दतावादी बालकृष्ण शर्मा उद्दाम आवेगों के कवि थे।''[18] वे ''प्रलयंकर'' संग्रह में 'पराजय-गीत' में कहते हैं—

आज खड्ग की धार कुंठिता है खाली तूणीर हुआ
विजय पताका झुकी हुई है, लक्ष्य-भ्रष्ट यह तीर हुआ[19]

'नवीन' के राष्ट्रीय गीतों में भारत-माता की वंदना और महापुरुषों एवं त्यागी महान् राष्ट्र-सेवी नारियों की प्रशस्तियाँ भी अपना अलग स्थान रखती है।[20] 'नवीन' जी की राष्ट्रीयता संकीर्ण या संकुचित नहीं थी। उनकी राष्ट्रीयता में किसी प्रदेश, भाषा, जाति, धर्म या अन्य राष्ट्र का विद्वेष नहीं था। यदि उनकी राष्ट्रीयता में किसी का विरोध था तो शोषकों का।[21] यहाँ उनकी कविता का पौरुष और ओज देखने जैसा है—

त्रस्त हुई भावों की गरिमा
महिमा सब सन्यस्त हुई,
मुझे न छेड़ो, इतिहासों के
पन्नों, मैं गतधीर हुआ।[22]

इनकी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता में वैयक्तिक चेतना तो है किन्तु वह राष्ट्रीयता के पथ पर अग्रसर होती हुई दिखलाई देती है। उदाहरण के लिए बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की ये पंक्तियाँ देखिए—

मैं हूँ भारत के भविष्य का
मूर्तिमान् विश्वास महान्
मैं हूँ अटल हिमालय समथिर
मैं हूँ मूर्तिमान् बलिदान।

'अपलक', 'रश्मिरेखा' और 'क्वासि' के गीतों में क्रांति एवं विप्लव का स्वर बड़ी तीव्रता के साथ मुखरित हुआ है।[23] राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण इनकी कविताओं में राष्ट्रीय आन्दोलनों और देशभक्ति की भावना का स्वर मुखर है। इनका सारा व्यक्तित्व क्षोभ और विश्रांति के ताने-बाने से बुना हुआ है। केवल भावना पर आश्रित होने के कारण 'नवीन' का काव्य ललकार या हार का काव्य बनकर रह जाता है।[24] 'नवीन' जी के काव्य-चेतना के विकास के दो प्रमुख आयाम हैं—एक वैयक्तिक जीवन की कटु स्मृतियाँ और दूसरा राष्ट्रीय आन्दोलन से उद्वेलित युग-परिवेश। इसलिए इनकी कविता में अकाल पत्नी-वियोग के उच्छ्वासों के साथ-साथ विदेशी-शासन-पराधीनता और रूढ़ियों के विरुद्ध सिंहनाद सुनाई देता है।[25] यद्यपि 'नवीन' जी के काव्य का अधिकांश भाग उनकी वैयक्तिक राग-चेतना से परिपूर्ण है, तथापि हिन्दी-जगत् में उन्हें एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में अधिक पहचाना जाता है। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा वाली कविताएँ संख्या में कम होती हुई भी प्रभाव और प्रचार की दृष्टि से बेजोड़ सिद्ध हुई। इसका कारण यह है कि इनकी राष्ट्रीय चेतना केवल सिद्धांतपरक आदर्शों के वर्णन तक सीमित नहीं अपितु समाज और देश की यथार्थ दशा पर आधारित है।[26] देशभक्तों की

ओर से कवि ने साम्राज्यवादी विदेशी शासकों को चुनौती देते हुए कहा—

वंचक! सावधान! पुण्यस्थल है, हृदय टटोलो तुम!
राष्ट्रों के जीवन में होता है न कहीं कुत्सित व्यापार,
अपने निर्बल अविश्वास का कालकूट मत घोलो तुम!

कवि राष्ट्रभक्ति को तलवार की धार पर चलने के समान मानता है, अतः उसने उस पथ पर चलने वालों की अनुशंसा करते हुए लिखा है—

ओ असिधारापथ के गामी!
विकटसुभट तुम, अथक पथिक तुम, कंटक-कीर्णित मग-अनुगामी।

कवि राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रति पूर्ण आशावादी था, अतः उसने भावी भारत के स्वर्णिम चित्र की कल्पना करते हुए लिखा—

फिर आएगी उषा हँसती, फिर होगा विहार चिर सुन्दर,
फिर से नव भैरवी छिड़ेगी, फिर होगी पंखों की फर-फर

किन्तु यह तभी संभव था जब देशवासी कष्टों की चिन्ता किये बिना बलि-पथ पर चढ़ते रहते। कवि ने इसलिए राष्ट्र-जन को ललकारते हुए कहा—

चढ़ चल, चढ़ चल, रुक मत रे बलिदानों के पुंज!
देश कहीं न लुभावे, तुझको यह जीवन की कुंज![27]

इनकी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविताओं में अनुभूतियों का सीधा सम्बन्ध इनके जीवन के साथ है। देश की स्वतंत्रता तथा समाज की नवीन रचना के लिए इन्होंने जो अथक साधना की थी, वही साधना निश्छल और सहज शक्ति के साथ इनकी राष्ट्रीय रचनाओं में भी दिखाई देती है।[28]

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिकों को चेतावनी देते हैं कि विजय सदा से त्याग और बलिदान मांगती रही है। जो जीवन की सम्पूर्ण आशाएँ और आकांक्षाएँ, यहाँ तक कि यौवन भी समर्पित करने को प्रस्तुत है, वही शताब्दियों की दासता के बंधनों को काटने में समर्थ हो सकता है—

है बलिवेदी, सखे, प्रज्वलित माँग रहीं ईंधन क्षण-क्षण,
आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन,
भस्मसात् हो जाने दो ये प्रबल उमंगे जीवन की,
अरे सुलगने दो बलिवेदी, चढ़ने दो बलि यौवन की।
(हम विषपायी जनम के, पृष्ठ 419)[29]

इनकी 'विप्लव-गान' कविता की अंतिम पंक्तियाँ थीं—

जीवन में जंजीर पड़ी खन-खन करती है मोहक स्वर से-
अन्दर आग छिपी है इसे भड़क उठने दो एक बार अब,
दहल जाय दिल, पैर लड़खडाये, कंप जाए कलेजा उनका,
नाश स्वयं कह उठे कड़ककर उस गंभीर कर्कश से स्वर से
बरसों की साथिन है तोड़ोगे क्या तुम अपने इस कर से?
ज्वालामुखी शान्त है इसे कड़क उठने दो एक बार अब
सिर चक्कर खाने लग जाए टूटे बंधन शासन गुण का
'सद्ध गीत क्रुद्ध तान निकली है मेरे अन्तर तर से।[30]

वे क्या चाहते थे, यह 'ओ मजदूर किसान, उठो' इस सन् 1943 में बरेली कारागार से लिखी कविता से स्पष्ट है। इस कविता के अंतिम छंद में ये कहते हैं—

किसका साहस है कि रख सके
तुमको यों चिर-बंधन में
स्वयं मुक्ति ही नाच रही है
सदा तुम्हारे स्पन्दन में!
तुममें विप्लव अंतर्हित है
जैसे ज्वाला चंदन में
टर रहा है तुम्हें विश्व यह
ओ जग के बलवान्, उठो
उठो, उठो ओ नंगों, भूखों,
ओ मजदूर किसान, उठो।[31]

धीरे-धीरे स्वराज्य आने पर 'नवीन' जो अधिक विश्वबंधुता की ओर झुकने लगे। उनके मन में यह विश्वास बढ़ा कि गरीब और अमीर वर्गों में झगड़ा लगाना और केवल क्रांति की बात करना काफी नहीं है। देश का निर्माण करने के लिए एकता की बड़ी जरूरत है। इसलिए 'भरत-खण्ड के तुम जन-गण' नामक 18 फरवरी, 1955 को लिखी कविता का यह अंतिम छंद बहुत ऐतिहासिक महत्व का है। 'नवीन' जी लिखते हैं—

एक धाम तुम, एक नाम तुम,
एक बात तुम, एक प्राण हे तुम
एक रागमय, इक यति-गतिमय,
सर्व-उदय के गेय गान हे तुम
श्रेय-प्रेम-साधना पूर्ण तुम,
मानवता के नव विहान हे तुम
खेदोदक का अर्घ्य चढ़ाकर
करो प्रातः का सन्ध्या-वंदन
भरत-खण्ड के तुम हे जन-गण![32]

इन्होंने जेल में इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति की किताबें पढ़ीं और वे अपने विश्वास पर दृढ़ होते गये कि भारत की राष्ट्रीयता, भारत की राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान विदेश से आयात किये हुए विचारों से नहीं होगा।[33]

1938 में दो राष्ट्रों का सिद्धांत मानने वाले अल्पसंख्यक गाँधी जी से अलग होने लगे। कवि 'नवीन' ने पूछा—

जिनको हमने अपना समझा
वे ही अब हमसे कहते हैं—
'तुम कौन हमारे होते हो?
तुम गलत धारणा धार चले'

(हम अलख निरंजन के वंशज)[34]

'ओ सदियों से आने वाले' इस कविता में उन्होंने गाँधी जी को दधीचि कहकर यों संबोधित किया—

तब प्रसाद से प्राप्त हुआ है
सदियों का खोया अपनापन,
अरे, आज हुंकार उठे हैं
ये नंगे, भूखे, जर्जर तन!
मत जा गोकुल छोड़, न जा,
यमुना पार अरे, ओ मोहन
-आज क्रांति का शंख बज रहा[35]

'नवीन' जी लिखते हैं—

जब जग विचलित होता दीखे, जब सब छोड़े संग अहो,
जब दुनियादारों की होवे धीमी हृदय उमंग अहो,
जब कि पड़े जय-जय की ध्वनि का कुछ-कुछ फीका रंग अहो,
तब तुम, अरे युवक, मत डोलो, पथ पर डटे अभंग रहो,
निरुत्साह की, तिरस्कार की यदि तुमको भावना मिले,
तो उसको, हे अटल हिमालय, सह जाओ तुम बिना हिले।

(हम विषपायी जनम के, पृष्ठ 419)[36]

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' विरचित 'उर्मिला' का उद्देश्य भी लक्ष्मण-पत्नी उर्मिला के उज्ज्वल चरित्र का प्रस्तुतीकरण रहा है। फिर भी यथास्थान राष्ट्रीय-सांस्कृतिक-भावना की वाणी मिली है। सीता तथा उर्मिला के शैशवकालीन वार्तालाप में भी कवि राष्ट्रीय गौरवसम्पन्न कथाओं का समावेश कर देता है। सीता उर्मिला की कथा सुनाती है कि एक अनार्य राजा ने गांधार की राजकुमारी को प्राप्त करने के लिये गांधार प्रदेश पर आक्रमण कर दिया। गांधार के राजा तथा राजकुमारी बन्दी हो जाते हैं। तब राजकुमारी राष्ट्ररक्षा के लिये तत्पर है—

आर्यों की बेटी हूँ, माँ, मैं इस खल को समझूँगी।
हूँ गांधार देश की बाला, देखूँगी इस शठ को,
ठोकर मार चूर्ण कर दूँगी इसके कच्चे घट को।
यह कृतघ्न निज दर्पमृत्तिका का कच्चा घट लाकर-
आर्यों की मेदिनी शिला से टकराता है आकर?
विश्व देख ले आज कि किसको आर्यसुता कहते हैं,
यह भी देखे विश्व कि किसको अग्निहुता कहते हैं।

इस प्रकार कवि ने आर्य-ललना का एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जो कायरों में भी उत्साह का संचार करने में समर्थ है। गांधार प्रदेश पर अनार्यों के आक्रमण को 'नवीन' जी ने भारत पर ही विदेशियों के आक्रमण और आधिपत्य के रूप में देखा है। अतएव इस दुर्गति से माँ को मुक्ति दिलाने के व्याज से भारत को ही अंग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाने की प्रेरणा देते हैं—

स्वर्गादपि गरीयसी प्यारी, जन्मभूमि का पल्ला-
खींचा है दुष्टों ने, बोला है स्वदेश पर हल्ला,
कौन हृदय है जो कि न उबले निज समाज की क्षति में?
कौन आँख है देख सके जो माँ को इस दुर्गति में?

'उर्मिला' में भारत के महिमामंडित अतीत का भी गौरवगान है, यथा—

पर चलने के पूर्व यहाँ से कर ले तू वंदन अभिराम-
इस सरयू सरिता का, जिसकी बालू में खेले हैं राम,
रघु ने जहाँ तपस्या करके,
आर्यधर्म पाला जी भर के,
जहाँ दिलीप सुधन्वा विचरे,
राजदंड शुभ कर में धरके;
आर्य सभ्यता के प्रकाश का एक अंश जिन कूलों से-
फैला वही चढ़ा दे अंजलि तू आँखों के फूलों से।

'नवीन' जी के अनुसार राष्ट्रीयता अंतरराष्ट्रीयता की अविरोधी ही होनी चाहिए। एक स्थान पर उन्होंने राम से कहलाया है—

राष्ट्रधर्म कैसे हो सकता
जनगण का ऐकांतिक धर्म?
पक्षसमर्थन सदा राष्ट्र का,
हो सकता है निपट अधर्म।[37]

राष्ट्रीयता भी 'नवीन' जी का स्वानुभूत विषय था। पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष की भावना, अतीत का गौरवगान, वर्तमान दुरवस्था का क्षोभपूर्ण चित्रण और स्वर्णिम भविष्य की कल्पना इनके काव्य में अनेक स्थानों पर उपलब्ध है। हृदयसंप्रेरित होने के कारण 'नवीन' की राष्ट्रीय कविताओं में पाठकों के हृदय में प्राण फूँक देने की क्षमता है।[38]

'नवीन' के स्वरों से देश का क्षुब्ध यौवन पराधीनता पाश को काटने के लिए तत्पर हो गया—

ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार-शक्ति का, जाग अरे निद्रा समोहित,
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंधारों में अपना ज्वलित फलीता भर दे।

(हम विषपायी जनम के, पृष्ठ 495)[39]

डॉ. सावित्री सिन्हा कहती हैं—''बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' राष्ट्र के यौवन के कवि हैं। उनकी कविता में दर्शन के भव्य संस्कार, यौवन के ओज और रस में पग कर एक विचित्र काव्यास्वाद की सृष्टि करते हैं।''[40]

निष्कर्ष

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आधुनिक हिन्दी-साहित्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक-काव्यधारा के एक प्रमुख कवि रहे हैं। इन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। देश के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने के कारण ये अनेक बार जेल भी गये। अतः इन्होंने जैसे जीवन का अनुभव किया, वैसा ही साहित्य में प्रकट कर दिया। इनका राष्ट्रवाद विश्व-बन्धुत्व की भावना के विरोध में नहीं है। इनके काव्य में राष्ट्र की वेदना स्पष्टतः दिखाई देती है। इनकी राष्ट्रीयता में विशेष रूप से शोषकों का विरोध किया गया है। कवि राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर चलने के कार्य को अत्यधिक दुष्कर मानते हैं। वे इस पथ पर चलने वाले मनुष्य की प्रशंसा करते हैं। इनका मानना था कि विजय हमेशा त्याग और बलिदान से प्राप्त की जाती है। परतंत्रता के विरुद्ध संघर्ष, अतीत का गौरव एवं सुनहरे भविष्य की कल्पना इनके काव्य में विशेष रूप से उपलब्ध हैं। अतः हिन्दी और हिन्दी-साहित्य में अपना पथ स्वयं बनाने वाले 'नवीन' जी का स्थान बहुत उच्च है। अतः इनके काव्य की शक्ति का लोहा सभी मानते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, डॉ. कुमुद, हिन्दी के निर्माता, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2012, पृ.सं. 233
2. उपर्युक्त, पृ.सं. 233
3. उपर्युक्त, पृ.सं. 233
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 234
5. उपर्युक्त, पृ.सं. 234
6. माचवे, डॉ. प्रभाकर, शर्मा, बालकृष्ण, 'नवीन', राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1987, पृ.सं. 09
7. उपर्युक्त, पृ.सं. 15
8. उपर्युक्त, पृ.सं. 16
9. उपर्युक्त, पृ.सं. 16
10. उपर्युक्त, पृ.सं. 16
11. उपर्युक्त, पृ.सं. 17
12. उपर्युक्त, पृ.सं. 20
13. उपर्युक्त, पृ.सं. 21
14. उपर्युक्त, पृ.सं. 21
15. उपर्युक्त, पृ.सं. 28
16. उपर्युक्त, पृ.सं. 30
17. उपर्युक्त, पृ.सं. 31
18. उपर्युक्त, पृ.सं. 32
19. उपर्युक्त, पृ.सं. 61
20. उपर्युक्त, पृ.सं. 62
21. उपर्युक्त, पृ.सं. 63
22. उपर्युक्त, पृ.सं. 74
23. डॉ. चातक, शर्मा, प्रो. राजकुमार, हिन्दी-साहित्य का इतिहास, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2000, पृ.सं. 306
24. उपर्युक्त, पृ.सं. 307
25. शर्मा, डॉ. श्रीनिवास, हिन्दी-साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1997, पृ.सं. 607
26. उपर्युक्त, पृ.सं. 611
27. उपर्युक्त, पृ.सं. 611
28. सिंह, डॉ. अमित कुमार, आधुनिक हिन्दी-साहित्य का इतिहास, साहित्य सरोवर, आगरा, 2020, पृ.सं. 136
29. डॉ. नगेन्द्र (प्रधान संपादक) , शुक्ल, आचार्य, रामेश्वर, 'अंचल' (संपादक) : श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' काशिकेय

हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास-दशम भाग उत्कर्ष-काल (काव्य) (सं. 1975-1995 वि.), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2028 वि., पृ.सं. 87

30. माचवे, डॉ. प्रभाकर, शर्मा, बालकृष्ण 'नवीन', पूर्वोक्त, पृ.सं. 62
31. उपर्युक्त, पृ.सं. 63-64
32. उपर्युक्त, पृ.सं. 64
33. उपर्युक्त, पृ.सं. 65
34. उपर्युक्त, पृ.सं. 65-66
35. उपर्युक्त, पृ.सं. 66
36. डॉ. नगेन्द्र (प्रधान संपादक) , शुक्ल, आचार्य, रामेश्वर, 'अंचल' (संपादक), पूर्वोक्त, पृ.सं. 86
37. उपर्युक्त, पृ.सं. 100-102
38. उपर्युक्त, पृ.सं. 114
39. उपर्युक्त, पृ.सं. 107-108
40. माचवे, डॉ. प्रभाकर, शर्मा, बालकृष्ण 'नवीन', पूर्वोक्त, पृ.सं. 31